



Hargharpanditji

॥ श्री कामदा एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री कामदा एकादशी व्रत कथा ॥

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी कामदा एकादशी कहलाती है। यह भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इस व्रत के प्रभाव से समस्त पापों का नाश होता है, शापों से मुक्ति मिलती है तथा सभी शुभ मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। इसका माहात्म्य वराह पुराण में वर्णित है।

श्री कामदा एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से विनम्रतापूर्वक पूछा—
"हे जनार्दन! चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? कृपया उसके माहात्म्य और व्रत कथा का वर्णन करें।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे राजन्! यह एकादशी 'कामदा एकादशी' के नाम से प्रसिद्ध है। इसका माहात्म्य अत्यंत अद्भुत है। इसकी कथा प्राचीन काल में महर्षि वशिष्ठ ने राजा दिलीप को सुनाई थी।"

प्राचीन समय में भोगीपुर नाम की एक अत्यंत समृद्ध और सुंदर नगरी थी।

वहाँ पुण्डरीक नामक नागराज राज्य करते थे। उनके दरबार में अनेक गंधर्व, किन्नर और अप्सराएँ संगीत एवं नृत्य द्वारा उनकी सेवा करते थे।

उसी राज्य में ललित नाम का एक गंधर्व अपनी अत्यंत रूपवती पत्नी ललिता के साथ रहता था। दोनों एक-दूसरे से अत्यधिक प्रेम करते थे। एक दिन राजा की सभा में ललित संगीत प्रस्तुत कर रहा था। उसी समय उसका मन अपनी पत्नी के प्रेम में इतना डूब गया कि उसका ध्यान भंग हो गया और उसके गायन में त्रुटि हो गई।

सभा में उपस्थित कर्कोटक नामक नाग ने यह बात राजा पुण्डरीक को बता दी। राजा इसे राजसभा का अपमान समझकर अत्यंत क्रोधित हुए और बोले—

"हे ललित! तुमने अपने कर्तव्य की उपेक्षा की है।

अतः तुम भयंकर राक्षस बन जाओ।"

राजा के शाप के प्रभाव से ललित उसी क्षण विकराल राक्षस बन गया।
उसका विशाल और भयावह शरीर देखकर सभी भयभीत हो गए। वह
वन-वन भटकने लगा।

पतिव्रता ललिता अपने पति की इस दशा से अत्यंत दुःखी हुई। उसने
अपने पति का साथ नहीं छोड़ा और उसके उद्धार का उपाय खोजती हुई
अनेक आश्रमों और तीर्थों में भटकती रही।

एक दिन वह विन्ध्याचल पर्वत पर स्थित श्रृंगी ऋषि के आश्रम पहुँची।
उसने ऋषि को प्रणाम कर अपने पति की पूरी कथा सुनाई और
करुणापूर्वक उनके उद्धार का उपाय पूछा।

श्रृंगी ऋषि ने कहा—

"हे सती! चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की कामदा एकादशी का श्रद्धा, भक्ति
और नियमपूर्वक व्रत करो। द्वादशी के दिन उसका पुण्य अपने पति को
समर्पित कर देना। भगवान विष्णु की कृपा से वह शापमुक्त हो जाएगा।"
ललिता ने ऋषि की आज्ञा के अनुसार पूर्ण श्रद्धा से कामदा एकादशी का
व्रत किया। उसने भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा की, रात्रि-जागरण किया
और द्वादशी के दिन विधिपूर्वक पारण करके व्रत का समस्त पुण्य अपने
पति ललित को अर्पित कर दिया।

व्रत के प्रभाव से उसी क्षण ललित राक्षस योनि से मुक्त होकर अपने दिव्य
गंधर्व स्वरूप में लौट आया। उसने दिव्य वस्त्र और आभूषण धारण किए।
पति-पत्नी दोनों ने भगवान विष्णु की स्तुति की और सुखपूर्वक अपने
दिव्य लोक को लौट गए।

तब भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे धर्मराज! जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक कामदा एकादशी का व्रत करता है,
उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, शाप और दोष दूर होते हैं,
मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा अंत में वह भगवान विष्णु के परम धाम

को प्राप्त करता है।"

कामदा एकादशी का संदेश

भगवान विष्णु की भक्ति और एकादशी व्रत से बड़े से बड़ा संकट दूर हो सकता है।

सच्ची निष्ठा, प्रेम और पतिव्रता धर्म का फल सदैव कल्याणकारी होता है। कामदा एकादशी शाप, दोष और पापों का नाश करने वाली मानी गई है। श्रद्धा, संयम और दान के साथ किया गया व्रत जीवन में सुख, शांति और समृद्धि प्रदान करता है।

कामदा एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु चैत्र शुक्ल पक्ष की कामदा एकादशी का व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु का पूजन करता है, उसे समस्त पापों से मुक्ति, मनोवांछित फल, पारिवारिक सुख, धन-धान्य, यश तथा अंत में श्रीहरि विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है।

॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्री कामदा एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥

"PUSH ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"